"जनेऊ(जंजू)"

• दइआ कपाह संतोख सूत जत गंढी सत वट । एहु जनेऊ जीअ का हई त पाडे घत । ना एहु तुटै न मल लगै ना एहु जलै न जाई । धंन सु माणस नानका जो गलि चले पाई ।

अर्थः- हे पण्डित ! अगर तेरे पास ये आत्मा के काम आने वाला जनेऊ है तो मेरे गले में डाल दे ऐसा जनेऊ जिसकी कपास दया हो, जिसका सूत संतोष का हो, जिसमें जत की गाँठें हों, और जिसकी गाँठ ऊँचा आचरण हो । हे पण्डित ! ऐसा जनेऊ ना टूटता है, ना ही इसे मैल लगती है, ना ये

जलता है और ना ही ये गायब होता है । हे नानक ! वे मनुष्य भाग्यशाली हैं, जिन्होंने ऐसा जनेऊ अपने गले में पहन लिया है ।

चउकड़ि मुलि अणाइआ बहि चउके पाइआ । सिखा कंनि चड़ाईआ गुर ब्राहमण थिआ । ओह मुआ ओह झाड़ि पइआ वेतगा गइआ । 1। म0-1।

अर्थः- हे पण्डित ! ये जनेऊ जो तू पहनाता फिरता है, ये तो तूने चार कौड़ी मूल्य दे के मंगवा लिया, अपने जजमान के चौके में बैठ के उसके गले में डाल दिया, फिर तूने उसके कान में उपदेश दिया कि आज से तेरा गुरु ब्राहमण हो गया । समय पूरा होने पर वह जजमान मर गया तो वह जनेऊ उसके शरीर से गिर गया भाव, अलग हो गया अथवा जल गया, पर आत्मा के साथ ना निभा, इस वास्ते वह जजमान बेचारा जनेऊ के बगैर ही संसार से चला गया ।

• लख चोरीआ लख जारीआ लख कूड़ीआ लख गालि । लख ठगीआ पहिनामीआ राति दिनस जीअ नालि । तग कपाहहु कतीऐ बाम्हण वटे आई ।

अर्थः- मनुष्य लाखों चोरियां और यारियां (यारियां, परस्त्री गमन) करता है लाखों झूठ बोलता है और गालियां निकालता है । दिन - रात लोगों से चोरी - चारी लाखों ठगी और पहनामियां करता है । ये तो है मनुष्य की अंतरात्मा का हाल, पर बाहर से देखिए, लोकाचारी क्या कुछ हो रही है कपास से भाव, कपास ला के धागा काता जाता है और ब्राहमण जजमान के घर आ के उस धागे को रख देता है ।

कुहि बकरा रिन्हि खाइआ सभ को आखै पाई । होइ पुराणा सुटीऐ भी फिरि पाईऐ होर । नानक तग न तुटई जे तगि होवै जोर ।2। म0-1।

अर्थः- घर आए हुए सारे सगे - संबंधियों को बकरा मार के पका के खिलाया जाता है घर का हरेक प्राणी कहता है 'जनेऊ पहना गया है, जनेऊ पहना गया है । जब ये जनेऊ पुराना हो जाता है तो फेंक दिया जाता है । और इसकी जगह और जनेऊ पहन लिया जाता है । हे नानक ! अगर धागे में जोर हो भाव, अगर आत्मा के काम आने वाला आत्मा को बल देने वाला जनेऊ हो तो वह धागा नहीं टूटता ।

• नाइ मनिऐ पति ऊपजै सालाही सच सूत । दरगह अंदरि पाईऐ तग न तूटसि पूत ।3। म0-1।

अर्थः- कपास से काते हुए सूत का जनेऊ पहन के ईश्वर के दर पर सही स्वीकार होने की आस रखनी व्यर्थ है, रब की दरगाह में तभी आदर मिलता है अगर ईश्वर का नाम दिल में दृढ़ कर लें, क्योंकि ईश्वर की महिमा ही सच्चा जनेऊ है ये स्वच्छ जनेऊ धारण करने से दरगाह में सम्मान मिलता है और ये कभी टूटता भी नहीं ।

तग न इंद्री तग न नारी । भलके थुक पवै नित दाड़ी । तग न पैरी तग न हथी । तग न जिहवा तग न अखी । वेतगा आपै वतै । वटि धागे अवरा धतै । लै भाड़ि करे वीआहु । कढि कागल दसे राहु । सुणि वेखहु लोका एहु विडाण । मनि अंधा नाउ सुजाण ।4। पउड़ी ।

अर्थः- पण्डित ने अपने इन्द्रियों और नाड़ियों को ऐसा जनेऊ नहीं पहनाया कि वे इंद्रिय विकारों की तरफ ना जाएं, इस वास्ते हर रोज उसकी बेइज्जती होती है पैरों को ऐसा जनेऊ नहीं पहनाया कि वे बुरी तरफ ना ले जाएं हाथों को जनेऊ नहीं डाला कि वे बुरे काम ना करें जीभ को कोई जनेऊ नहीं डाला कि वह पराई निंदा करने से हटी रहे, आँखों को ऐसा जनेऊ नहीं डाला कि वे पराई स्त्री की ओर ना देखें । खुद तो ऐसे जनेऊ के बगैर भटकता फिरता है, पर कपास के सूत के धागे बाँट - बाँट के और लोगों को डालता है, अपने ही जजमानों की बेटियों के विवाह

दक्षिणा ले - ले के करता है और पत्री देख - देख के उन्हें रास्ता दिखाता है । हे लोगो ! सुनो, देखो, ये आश्चर्यजनक तमाशा ! पण्डित खुद तो मन से अंधा है भाव, अज्ञानी है, पर अपना नाम रखवाया हुआ है 'सियाना' ।

• साहिब होई दइआल किरपा करे ता साई कार कराइसी । सो सेवक सेवा करे जिसनो हुकम मनाइसी । हुकमि मनिऐ होवै परवाण ता खसमै का महल पाइसी । खसमै भावै सो करे मनहु चिंदिआ सो फल पाइसी । ता दरगह पैधा जाइसी ।15।

(1-471)

अर्थः- जिस सेवक पर प्रभु मालिक दयालु हो जाए, मेहर करे, तो उससे वही काम करवाता है जो उसे भाता है जिस को अपनी रजा में चलाता है, वह सेवक प्रभु पति की सेवा करता है प्रभु की रजा में राजी रहने के कारण सेवक प्रभु के दर पर स्वीकार हो जाता है और मालिक का घर ढूँढ लेता है । जब सेवक वही काम करता है जो मालिक को अच्छा लगता है तो उसे मन - भाता फल मिलता है, और वह प्रभु की दरगाह में इज्जत से जाता है ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि – "रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नहीं हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"